अनाया व्याकरण

Teacher Manual
Class-1-5

Future Print

अनाया व्याकरण-1

1. भाषा एवं व्याकरण

(क) 1. लिखित भाषा 2. सांकेतिक भाषा 3. मौखिक भाषा

(ख) 1. तीन 2. हिन्दी 3. व्याकरण 4. तीन

(ग) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भावों और विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाते हैं। 2. लिखित भाषा, मौखिक भाषा, और सांकेतिक भाषा 3. व्याकरण वह शास्त्र है जो हमें किसी भाषा की शुद्धता के नियम सिखाता है।

2. वर्ण और वर्णमाला

(क) आलू, गाजर, बैंगन, मूली, गोभी, खीरा, टमाटर, पालक

(ख) 1. ग्यारह 2. दो 3. वर्णमाला 4. अ 5. ध्वनि, वर्ण, अक्षर

(ग) 1. काम, दाम, नाम 2. पूज्य, कूल, पूल 3. कौआ, नौका, दौलत 4. किसान, मिस्त्री, दिन 5. ऋषि, कृपा, नृप

(घ) 1. मुख से निकलने वाली सबसे छोटी ध्वनियाँ, वर्ण कहलाती हैं। 2. वर्ण दो प्रकार के होते है। 3. स्वर: जिन ध्वनियों का उच्चारण .... हिंदी में 11 स्वर हैं। व्यंजन: जिन ध्वनियों का उच्चारण .... हिन्दी में सामान्यत: 37 व्यंजन हैं। 4. वर्णों के चिह्नों को मात्रा कहलाते हैं।

3. शब्द-विचार

(क) 1. नल 2. मन 3. बल 4. चल 5. कम 6. धन

(ख) 1. रबड़ 2. पहल 3. चहल 4. सड़क 5. धड़क 6. महल

(ग) 1. अदरक 2. धड़कन 3. टमटम 4. अरजर 5. अजगर 6. पलटन

(घ) 1. एक से अधिक वर्णों के समूह को शब्द कहते हैं। 2. शब्दों के अर्थों से ही भाषा को बल मिलता है।

4. संज्ञा

(क) तरबूज, खरगोश, रेडियो, अस्पताल; गुलाब, बस स्कूल, कबूतर; अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सेब

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. नाम वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। 2. रोहित, पूजा, महात्मा गाँधी, लाल किला, शेर

5. लिंग

(क) ग्वालिन, शेरनी, गाय, गुड़िया, चिड़िया, रानी

(ख) बैल, मोर, पिता, मामा, गुड्डा, बादशाह

(ग) 1. चिड़िया दाना चुगती है। 2. बकरा घास खाता है। 3. छात्रा अध्यापिका के पास गई।

(घ) 1. शब्द के जिस रूप से किसी संज्ञा के स्त्री या पुरूष जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। 2. लिंग दो प्रकार के होते हैं। पुल्लिंग- राजा, बैल, लड़का। स्त्रीलिंग- रानी, गाय, लड़की

6. वचन

(क) तितली-तितलियाँ, आम-आमों, कन्या-कन्याएँ, ऊँट-ऊँटों, मुर्गा-मुर्गों, पेड़-पेड़ों

(ख) माला-मालाएँ, बच्चा-बच्चे, घड़ी- घड़ियाँ, आँख-आँखें

(ग) 1. केले 2. मिठाइयाँ 3. कहानी 4. बहनें 5. रुपया 6. मेज

(घ) 1. कमरे साफ हैं। 2. कहानियाँ अच्छी हैं। 3. सड़कें चौड़ी हैं। 4. लड़कियाँ पढ़ती हैं।

(ङ) 1. संख्या का बोध कराने वाले शब्द को वचन कहते हैं। 2. वचन दो प्रकार के होते हैं- एकवचन और बहुवचन।

7. सर्वनाम

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. उसने 2. हम 3. वह 4. उसका 5. तुम्हें 6. तुम्हारी 7. आप 8. तुम

(ग) 1. सोहन की पुस्तक खो गई है। वह पुस्तक ढूँढ़ रहा है। 2. मीरा और सीमा सहेलियाँ हैं। वे बातें कर रही हैं। 3. ज्योति एक लड़की है। नितिन उसका भाई है। 4. मैदान में कुछ घोड़े हैं। वे दौड़ रहे हैं। 5. देखो, बंदर नाच रहा हैं। उसके पैरों में घुंघरू बँधे हुए हैं।

(घ) 1. मैं 2. कोई 3. मुझे 4. हम 5. हमारे 6. तुम्हारे 7. तुम 8. उसे 9. तुम 10. उसके

(ङ) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते है; जैसे- हम, उसे, तुम, उसके, वह। 2. हम, हमारे, उन्होंने, उन्हें, ये, वे।

8. विशेषण

(क) खट्टे-रसीले, बड़ा-पका, छोटी-प्यारी, लाल-स्वादिष्ट, नीली-नई, चितकबरी-सुंदर

(ख) 1. सुन्दर 2. मीठा 3. तेज 4. लम्बी 5. मोटा 6. सुस्त 7. प्यारा 8. कुछ 9. अच्छा 10. नीला

(ग) 1. चाय 2. पानी 3. सेब 4. आसमान 5. कहानी 6. तितली

(घ) 1. संख्या और सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। 2. जिस शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

(ङ) 1. बंदर बहुत चतुर होता है। 2. नीता के पास तीन गुड़ियाँ है। 3. महराणा प्रताप के पास चेतक नाम का काला घोड़ा था। 4. आम बहुत मीठा है। 5. थोड़ा आराम कर लो।

9. क्रिया

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) उड़ना, पढ़ना, खेलना, सींचना, खाना, सोना

(ग) 1. सो रहा है 2. खाना बनाया 3. चिट्ठी लिखना 4. रो रहा है 5. धो रहा है 6. जीत लिया है 7. चित्र बनाया 8. खेल रहा है 9. चढ़ रहे हैं 10. गा रही है

(घ) 1. बैठूँगी। 2. चल रहा है। 3. बोलता। 4. गरज रहे हैं। 5. बजाता है।

(ङ) 1. जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उसे क्रिया कहते हैं। 2. क्रिया के बिना वाक्य अधूरा लगता है।

10. पर्यायवाची शब्द

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) पेड़-वृक्ष, गज-हस्रिती, सूर्य-दिनकर, पंकज-नीरज, सेव-सेब, शशि-चंद्रमा

(ग) 1. सरोवर, पोखर, तड़ाग 2. माँ, जननी, अंबा 3. पर्वत, गिरि, नग 4. धरती, जमीन, वसुधा

(घ) तन-शरीर, सूरज-सूर्य, बादल-मेघ, मित्रता-दोस्ती, पुष्प-फूल, पुस्तक-किताब

(ङ) 1. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. पर्यायवाची शब्दों को समानार्थी शब्द भी कहते हैं।

11. विलोम शब्द

(क) खुशबू, खट्टा, दोस्त, पश्चिम, नए, ज्यादा

(ख) 1. ठण्डा 2. कड़वी 3. बदबू 4. खरीदने 5. तेज 6. साफ 7. अंधेरा 8. निडर 9. साफ 10. नजदीक

(ग) ताजा-बासी, लाभ-हानि, काला-सफेद, आसमान-धरती, चढ़ना-उतरना, मालिक- नौकर, झोपड़ी-महल

(घ) बुरा, दुश्मन, हार, नया, गरीब, निडर, ज्यादा, अनुचित, खरीदना, धरती

(ङ) स्वयं कीजिए।

12. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) **कुम्हार**- जो मिट्टी के बर्तन बनाता है। **शिक्षक**- जो शिक्षा देता है। **डॉक्टर**- जो इलाज करता है। **जोकर**- जो हँसाता है। **सिपाही**- जो सुरक्षा करता है। **किसान**- जो खेती करता है।

(ख) बीमार, आस्तिक, गड़ेरिया

(ग) 1. दीदी 2. चिड़ियाघर 3. भारतीय 4. डॉक्टर 5. शाकाहारी

(घ) 1. सहपाठी 2. सदाचारी 3. अनंत 4.मांसाहारी 5. निर्धन 6. अदृश्य

(ङ) 1. जलचर 2. थलचर 3. ग्रामीण 4. कृतघ्न 5. निर्दय

(च) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रयोग से भाषा सुंदर एवं संक्षिप्त हो जाती है।

13. मुहावरे

(क) 1. बहुत मेहनती 2. आश्चर्य में पड़ना 3. बहुत गुस्सा होना 4. बहुत प्यारा

(ख) 1. बहुत दु:खी करना 2. हैरान रह जाना 3. खुश होना 4. साफ मना करना

(ग) 1. कान भरना, उल्लू बनाना, चेहरा खिल उठना

(घ) जो शब्द समूह अपने साधारण अर्थ के स्थान

पर विशेष अर्थ बताते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।

14. पत्र-लेखन

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. उसे बुखार हो गया था। 2. राम कृष्ण मिशन मॉडल स्कूल 3. 500 रूपये

अनाया व्याकरण-2

1. भाषा एवं व्याकरण

(क) मौखिक, मौखिक

(ख) 1. हिन्दी 2. भाषा 3. लिखित 4. उड़िया 5. व्याकरण 6. मौखिक रूप

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✓ 8. ✗

(घ) 1. असमिया 2. बंगाली 3. उड़िया 4. राजस्थानी 5. गुजराती 6. पंजाबी

(ङ) 1. हम बोलकर तथा लिखकर अपने विचार प्रकट करते हैं और सुनकर तथा पढ़कर दूसरों के विचार जानते हैं। 2. जिस साधन के द्वारा हम अपने विचारों .... उसे भाषा कहते हैं। 3. व्याकरण में भाषा के तीन रूप पाए जाते हैं: मौखिक भाषा, लिखित भाषा और सांकेतिक भाषा। 4. कश्मीर-कश्मीरी, पंजाब- पंजाबी महाराष्ट्र-मराठी, केरल-मलयालम, कर्नाटक- कन्नड़, तमिलनाडु-तमिल, बंगाल- बांग्ला, उड़ीसा-उड़िया, आंध्र प्रदेश-तेलुगु 5. भाषा के तीन अंग है: 1. वर्ण या अक्षर 2. शब्द 3. वाक्या वर्णों के मेल से शब्द .... पूरी बात समझ में आ जाती है। अत: ये वाक्य हैं। 6. व्याकरण वह शास्त्र है, जिससे किसी भाषा को शुद्ध रूप में बोलने व लिखने का ज्ञान प्राप्त होता है।

2. वर्ण और वर्णमाला

(क) स; ष; ठ; ड; भ; म; व; श; ध; न; ज; झ; त; थ; ल; व; श; स; फ; ब; ग; घ; च; छ

(ख) **क वर्ग**- क, ख, ग, छ, ङ; **च वर्ग**- च, छ, ज, झ, ञ; **ट वर्ग**- ट, ठ, ड, ढ़, ण; **त वर्ग**- त, थ, द, ध, न; **प वर्ग**- प, फ, ब, भ, म

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✗

(ङ) सूरजमुखी, गुलाब, गेंदा, चमेली

(च) 1. व्याकरण में ध्वनि का अर्थ वर्ण होता है। 2. वर्ण दो प्रकार के होते हैं: स्वर, व्यंजन स्वर: जिन वर्णों का उच्चरण बिना किसी .... अन्य दो वर्ण मिलाकर ये पैंतीस होते हैं। 3. 11 स्वर और 35 व्यंजन 4. हिंदी भाषा में ड़, ढ़, ज, फ वर्णों के नीचे .... बिंदी लगाकर बनाए जाते हैं।

(छ) आँख, पतंग, बंदर, कुँआ, दाँत, अंगूर, अंडा, चाँद, कंघी, पंखा, साँप, मंदिर

(ज) डंडा, गुड़िया, लड़की, डाकिया, डमरू, सड़क, लड़ाई, पेड़ा, डिब्बा, कपड़ा

3. शब्द विचार

(क) 1. सैनिक 2. कारखाना 3. हापुड़ 4. बैलगाड़ी 5. खरगोश 6. कटहल 7. समोसा 8. कम्प्यूटर

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) **सार्थक शब्द**- गाय, लड़की, सोना, धोती, सपना **निरर्थक शब्द**- वाय, वड़की, वोना, वोती, वपना

(घ) 1. जब सार्थक ध्वनि-समूह कोई अर्थ दे, तभी वह शब्द बन पाता हैं। 2. जिन शब्दों का कुछ अर्थ होता है, वे 'सार्थक शब्द' कहलाते हैं; जैसे- धोती, अर्पणा आदि। जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, वे 'निर्थक शब्द' कहलाते हैं; जैसे ओती, वर्पणा आदि।

4. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. (ii) 2. (iii) 3. (iii) 4. (i)

(ख) 1. धेनु, गौ, सुरभि 2. जननी, माँ, अम्बा 3. सूरज, दिनकर, दिवाकर 4. चन्द्रमा, शशि, चन्द्र 5. बेटा, वत्स, तनय

5. विलोम शब्द

(क) 1. हार 2. अप्रसन्न 3. कठिन 4. डरपोक 5. अपमान

(ख) 21 **(ग)** स्वयं कीजिए।

6. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) 1. चौराहा 2. ग्रामीण 3. धोखेबाज 4. डाकू

(ख) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द वाक्यांशबोधक शब्द कहलाते हैं।

7. संज्ञा

(क) 1. मनोज, चोर 2. दीपा, जयपुर 3. जंगल, शेर 4. माली, बगीचे 5. अपूर्व, लड़का

(ख) 1. वस्तु का नाम 2. स्थान का नाम 3. गुण का नाम 4. शहर का नाम 5. व्यक्ति का नाम 6. भाव का नाम

(ग) 1. तुम 2. हम, लिखो, बनाओ 3. तुम्हारा, अपना, 4. हमारा 5. खाओ, मैं 6. जाना

(घ) 1. कोलकाता 2. बुराई 3. हिमालय, गंगा, यमुना 4. कुत्ता, जानवर 5. भीम, दुर्योधन 6. सफलता 7. भलाई

(ङ) 1. किसी व्यक्ति, प्राणी, स्थान, वस्तु और भाव के नाम को संज्ञा कहते है। 2. संज्ञा के मुख्यत: तीन भेद होते है- जातिवाचक, व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञा। 3. जातिवाचक संज्ञा: जिस शब्द से उसकी संपूर्ण जाति .... आदि के नाम का बोध हो, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं। 4. जिस शब्द से किसी प्राणी या वस्तु के किसी गुण, भाव या दशा (अवस्था) का बोध होता है, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं। 5. मीठा-मिठास, बुरा-बुराई, अपना-अपनत्व, मन-मनत्व

8. लिंग

(क) बालक, बूढ़ा, बैल, मोर, राजा, बालिका, बुढ़िया, गाय, मोरनी, दुल्हन

(ख) गायिका, घोड़ी, मालिन, अध्यापिका, सेठानी, धोबिन, नागिन, श्रीमती

(ग) नौकर, बछड़ा, भाई, शेर, कुत्ता, कबूतर, धोबी, बालक

(घ) 1. भाई 2. मौसी जी 3. राजकुमार 4. सेठ

9. वचन

(क) मालाएँ, बेटे, बसें, बगीचे, मिठाइयाँ, मूर्तियाँ, दुकानें, डाकिए

(ख) 1. डाकिए 2. दवाएँ 3. बगीचे 4. चोटें 5. गहने

(ग) 1. नदियाँ बहती है। 2. ये कमरे साफ हैं। 3. छुट्टियाँ खत्म हो गई। 4. खेत में गाएँ चर रही है। 5. लड़के बगीचे में खेल रहे थे।

(घ) 1. शब्द के जिस रूप से एक अथवा अनेक का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। 2. एकवचन, बहुवचन 3. एकवचन शब्द के जिस रूप से एक ही प्राणी, वस्तु या पदार्थ का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे: गमला, खिड़की, लड़का, कविता, आँख आदि। बहुवचन: शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों या पदार्थों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे गमले, खिड़कियाँ, लड़के, कविताएँ, आँखें आदि।

10. सर्वनाम

(क) 1. जो, उसे 2. तुम, अपना 3. मैं, अपना, स्वयं 4. कौन 5. उसके

(ख) 1. मेरे 2. आप, मुझे 3. तुम, अपना 4. उसने, हमारी 5. उसने, मेरे

(ग) 1. क्या 2. कौन 3. किसकी 4. किसने 5. कौन-सा

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. सर्वनाम सभी नामों के बदले समान रूप से प्रयोग किए जा सकते हैं। 2. पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चय -वाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम

11. विशेषण

(क) 1. जहरीले; गुणवाचक 2. सारा; परिमाण वाचक 3. यह; संकेतवाचक 4. पहले; गुणवाचक 5. इस; संकेतवाचक

(ख) 1. चमकीले 2. बड़ा 3. प्रथम 4. ज्यादा 5. कँटीली

(ग) 1. खट्टे, कच्चे 2. फटी, नई 3. साफ, गंदा 4. सुंदर, बलवान 5. ऊँचा, अटल 6. नई, पुरानी 7. छोटी, सुंदर 8. गर्म, मीठी 9. नया, बड़ा 10. सुंदर, प्यारी

(घ) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। 2. गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, संकेतवाचक विशेषण 3. विशेषण जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं।

12. क्रिया

(क) 1. पकड़ लिया सकर्मक 2. लगाया सकर्मक 3. उड़ रहे थे सकर्मक 4. खिले हैं सकर्मक 5. जाँच की अकर्मक 6. खेल रहे हैं सकर्मक

(ख) 1. लिख रहा है। 2. सो गया। 3. चला रहा था। 4. खरीदा। 5. खेल रहा था।

(ग) 1. जिन शब्दों से किसी काम के करने अथवा होने का पता चलता है, वे क्रिया कहलाता है। 2. क्रिया के दो भेद हैं- सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया। 3. भागना, कूकना, रोना, हँसना।

13. क्रियाविशेषण

(क) 1. वहाँ 2. प्रतिदिन 3. जोर-जोर 4. आज 5. ऊपर

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. जो शब्द क्रिया की विशेषता को प्रकट करते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते है।

2. कालवाचक क्रियाविशेषण, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, रीतिवाचक क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

14. संबंधबोधक

(क) 1. के साथ 2. के पश्चात् 3. के मारे 4. के पीछे 5. के सामने

(ख) 1. के साथ 2. के बीच 3. के ऊपर 4. के नीचे 5. के पीछे

(ग) 1. में 2. के पास 3. के नीचे 4. के पास 5. तेजी से 6. के पीछे

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से जोड़ने वाले शब्दों को संबंधबोधक कहते हैं। 2. संज्ञा अथवा सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से जोड़ने वाले शब्दों को संबंधबोधक कहते हैं। क्रिया की विशेषता बताने वाला शब्द, क्रिया विशेषण कहलाता है।

15. समुच्चयबोधक

(क) 1. इसलिए 2. परंतु 3. क्योंकि 4. बल्कि

(ख) 1. और, इसलिए 2. या 3. क्योंकि 4. बल्कि

(ग) 1. सुदेश ने पुस्तक खोली और वह पढ़ने लगा। 2. कुसुम बिस्तर पर लेटी है क्योंकि वह बीमार है। 3. नीरज ने मुझे देखा लेकिन उसने मुझसे बात नहीं की। 4. दीपा अनुत्तीर्ण हो गई क्योंकि उसने मेहनत नहीं की थी।

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) जो शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं, वे समुच्चयबोधक या योजक कहलाते हैं।

16. विस्मयादिबोधक

(क) 1. हर्षसूचक 2. घृणासूचक 3. शोकसूचक 4. हर्षसूचक 5. विस्मयसूचक 6. कृपासूचक 7. निवेदनसूचक

(ख) 1. अहा! 2. वाह! 3. उफ! 4. छि:! 5. अरे! 6. शाबाश! 7. आह! 8. अरे!

(ग) स्वयं कीजिए।

17. वाक्य

(क) 1. अंडे देती है। 2. दूध देती है। 3. पटरी पर चलती है। 4. पत्र लाता है। 5. सप्ताह का पहला दिन है। 6. पढ़ने में बहुत होशियार है। 7. संसार का सबसे ऊँचा पर्वत है। 8. ठंडी हवा देता है।

(ख)

	उद्देश्य	विधेय
1.	हम	कल घूमने जाएँगे।
2.	चित्रकार	चित्र बना रहा है।
3.	नानी	ने कहानी सुनाई।
4.	गौरी	नाच रही है।
5.	वैभव	कक्षा में प्रथम आया।

18. विराम-चिह्न

(क) 1. अरे, तुम्हें चोट कैसे लगी? 2. कॉपी, किताब, पेंसिल तीनों लेकर आना। 3. लोकमान्य तिलक ने कहा– ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' 4. मेरा बस्ता कहाँ है?

(ख) 1. मनु ने कहा– बाजार से खीर के लिए दूध, सलाद के लिए खीरा, थोड़ी लालमिर्च और पापड़ भी ले आना। 2. नेहा, रश्मि, मालती, शुचिता और पार्वती ने समूह नृत्य में भाग लिया। नेहा, राधा, रश्मि, कृष्ण और मालती, शुचिता, पार्वती गोपियाँ बनीं। 3. रमा की माता ने जब उसे मरा हुआ देखा तो बहुत शोकाकुल हुई और कहने लगी– ''हाय राम, मेरा सब कुछ उजड़ गया।''

(ग) 1. कथन का आशय तथा लिखते समय रूकने का संकेत देने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते है। 2. कथन का आशय प्रकट करने में विराम-चिह्न अपने महत्त्व से अवगत कराने का प्रयास करते हैं। 3. (i) पूर्ण विराम (।): जहाँ वाक्य पूरा होता है, वहाँ पूर्ण विराम (।) का चिह्न लगाया जाता है। (ii) अल्पविराम (,): पढ़ते समय जहाँ कम या थोड़ी ही देर के लिए रुकना होता है, वहाँ अल्पविराम (,) का चिह्न लगाया जाता है। (iii) प्रश्नवाचक चिह्न (?): यह चिह्न प्रश्नों के अंत में लगाया जाता है। (iv) विस्मयादिबोधक चिह्न (!): हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्दों और वाक्यों के बाद इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

19. मुहावरे

(क) 1. दाँत खट्टे कर दिए। 2. मेरे मुँह में पानी आ गया। 3. आँख लग गई। 4. आँखों के तारे थे।

(ख) 1. बड़ी-बड़ी बातें करना। 2. ढीठ हो जाना। 3. बहुत प्यारा

(ग) जो वाक्य या वाक्यांश साधारण अर्थ के स्थान पर विशेष अर्थ बतलाते हैं, उन्हें मुहावरे कहते हैं।

अनाया व्याकरण-3

1. भाषा एवं व्याकरण

(क) 1. (iv) 2. (ii) 3. (iii)

(ख) 1. भाषा 2. सुनकर, बोलकर 3. लिखित 4. लिपि

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) मलयालम, मराठी; तमिल, तेलुगु

(ङ) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है। 2. भाषा के तीन रूप हैं- मौखिक, लिखित तथा सांकेतिक 3. हिन्दी 4. लिखित भाषाओं में अक्षरों को लिखने का जो तरीका है, उसे लिपि कहते है। 5. किसी भाषा के बोलने, लिखने और पढ़ने के निश्चित नियमों को 'व्याकरण' कहते है।

2. वर्ण और वर्णमाला

(क) 1. (iv) 2. (ii) 3. (iii) 4. (ii)

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. आशीर्वाद 2. धर्म 3. व्रत 4. सिपाही 5. पुजारी

(घ) 1. सप्ताह 2. कर्कश 3. विद्या 4. सच्चा 5. स्वामी 6. कृतार्थ

(ङ) 1. चाँद 2. आँख 3. आँगन 4. भुजंग 5. कुंदन 6. अँगूठी

(च) 1. काम 2. फूल 3. दाम 4. थैला 5. बैल 6. काला 7. जेब 8. नेता 9. तथा 10. शीश

(छ) क्षात्र, क्षत्रिय, क्षेत्र; त्राण, त्रिभुज, त्रिकोण ; ज्ञान, ज्ञानी, ज्ञानवान

(ज) भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके और खण्ड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।

3. शब्द

(क) 1. (i) 2. (iii) 3. (ii) 4. (ii)

(ख) 1. सार्थक 2. सार्थक 3. निरर्थक 4. निरर्थक 5. सार्थक

(ग) मोर, चिड़िया, कार, शेर, गुलाब, किताब

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. दो या दो से अधिक वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है। 2. जिन शब्दों का कुछ अर्थ निकलता है, उन्हें 'सार्थक शब्द' कहते हैं। जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं निकलता है, उन्हें 'निरर्थक शब्द' कहते है।

4. संज्ञा

(क) 1. (iii) 2. (i) 3. (ii) 4. (iv)

(ख) 1. भाई 2. बिल्ली 3. किसान 4. शेर 5. घर, वृक्ष 6. माँ, बाजार

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. बत्तख 2. भावना 3. रवि, बचपन 4. गंगा, भारत, नदी 5. किसान, हल 6. ईमानदारी, फल

(ङ) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा 3. जिन शब्दों के द्वारा जाति का ज्ञान प्राप्त होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है; जैसे- मनुष्य, पशु, जानवर, पक्षी, नदी, गाँव, शहर, पहाड़, फल, सब्जी आदि। 4. जातिवाचक

5. लिंग

(क) 1. (iii) 2. (iii) 3. (iii) 4. (ii)

(ख) 1. लेखक 2. मोरनी 3. बालिका 4. माता जी 5. चाचा

(ग) 3. चिड़िया-स्त्रीलिंग 4. सूरज-पुल्लिंग

(घ) **स्त्रीलिंग**- बकरी, गाय, शिक्षिका, माता, नदी, चिड़िया, बुढ़िया, गंगा; **पुल्लिंग**- आचार्य, धोबी, नौकर, वर, हिमालय, गधा

(ङ) 1. लिंग स्त्री जाति और पुरूष जाति का बोध कराता है। 2. लिंग के दो भेद होते हैं- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग

6. वचन

(क) 1. (iii) 2. (iii) 3. (iii) 4. (iii)

(ख) 1. केले 2. मिठाइयाँ 3. कहानी 4. बहनें 5. रूपया 6. मेज

(ग) 1. कमरे साफ हैं। 2. कहानियाँ अच्छी है। 3.

सड़कें चौड़ी हैं। 4. लड़कियाँ पढ़ती हैं।

(घ) तितलियाँ, चूहे, शेर, मुर्गी, किताबें, बकरियाँ

7. कारक

(क) 1. (iii) 2. (ii) 3. (ii) 4. (i)

(ख) 1. की, संबंध 2. पर, अधिकरण 3. ने, कर्ता 4. से, करण 5. को, कर्म

(ग) 1. ने 2. को 3. से (साथ/के द्वारा) 4. के लिए 5. से (अलग होने के अर्थ में) 6. का, की, के 7. में, पर 8. हे! अरे!

(घ) 1. कारक वाक्य के शब्दों में परस्पर संबंध बताने का कार्य करते हैं। 2. **करण कारक:** कर्ता द्वारा जिस वस्तु से कोई क्रिया करने में सहायता ली जाती है। उसे 'करण कारक' कहते हैं। इसका चिह्न 'से' के द्वारा है। **अपादान कारक:** शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो, उसे 'अपादान कारक' कहते हैं। इसका चिह्न 'से' है।

8. सर्वनाम

(क) 1. (iv) 2. (i) 3. (iv) 4. (iii)

(ख) 1. मैं 2. कोई 3. मुझे 4. हम 5. हमारे 6. तुम्हारे 7. तुम 8. उसे 9. तुम 10. उसके

(ग) 1. उसने मेरी 2. हम 3. वह 4. उसका 5. तुम्हें 6. तुम्हारी 7. आप 8. तुम

(घ) साफ, किताब, राम, केला, तुम्हारे, गाय

(ङ) 1. सोहन की पुस्तक खो गई है। वह पुस्तक ढूँढ़ रहा है। 2. मीरा औ सीमा सहेलियाँ हैं। वे बातें कर रही हैं। 3. ज्याति एक लड़की है। नितिन उसका भाई है। 4. मैदान में कुछ घोड़े हैं। वे दौड़ रहे हैं। 5. देखो, बंदर नाच रहा है। उसके पैरों में घुँघरू बँधे हुए हैं।

(च) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। 2. पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चय -वाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, सम्बन्धवाचक सर्वनाम 3. वे शब्द जो कहने वाले, सुनने वाले एवं जिसके बारे में बातचीत की जाती है, उसके बारे में प्रयोग किया जाता है उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। 4. **उत्तम पुरूष:** वे शब्द जो स्वयं के बारे (बात करने वाले) में प्रयोग किए जाते है, उन्हें उत्तम पुरूष कहते है। **मध्यम पुरुष:** वे शब्द जो सुनने वाले के लिए प्रयोग किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं। **अन्य पुरुष:** वे शब्द जो किसी अन्य के बारे में प्रयुक्त किए जाएँ, उन्हें पुरुष सर्वनाम कहते है।

9. विशेषण

(क) 1. (ii) 2. (i) 3. (ii) 4. (ii)

(ख) लाल, गोला, नारंगी, दुबला, सगा, पचास

(ग) 1. छोटा 2. बुद्धिमान 3. दो 4. पुराना 5. लाल 6. प्रथम 7. नन्ही 8. साफ

(घ) काला, वफादार, रंग-बिरंगे, ऊँचा, नए, पाँच, नीला, सच्चा

(ङ) खिलौना, वह, देखो, पतंग, गाय, टमाटर, पिताजी, आप, घड़ियाँ, दूध

(च) 1. संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। 2. विशेषण चार प्रकार के होते हैं- गुणवाचक, परिणामवाचक, संख्यावाचक, संकेतवाचक। 3. शहरी, देशी, विदेशी, काला, पीला 4. संज्ञा और सर्वनाम 5. विशेषण शब्द जिनकी विशेषता बतलाते हैं, वे 'विशेष्य' कहलाते हैं।

10. क्रिया

(क) 1. (i) 2. (ii) 3. (ii) 4. (ii)

(ख) तैराना, लिखना, सींचना, सोना, खाना, उड़ना

(ग) 1. सो रहा हैं। 2. खाना बनाया। 3. लिखी। 4. रो रहा है। 5. धो रहा है।

(घ) 1. बैठूँगी। 2. चल रहा है। 3. बोलता। 4. गरज रहे हैं। 5. बजाता है।

(ङ) दूध, वह, राम, कहाँ, पेड़

(च) जिन शब्दों के किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।

11. काल

(क) 1. (ii) 2. (ii) 3. (ii) 4. (iv)

(ख) 1. भविष्यत् 2. भूत 3. वर्तमान 4. वर्तमान 5. भूत

(ग) 1. भूत काल 2. वर्तमान काल 3. भूत काल 4. भविष्यत् काल 5. वर्तमान काल

(घ) 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने का पता चलता हो, उसे काल कहते हैं। 2. काल के तीन भेद हैं- भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल।

12. अव्यय

(क) 1. (ii) 2. (iii) 3. (iii) 4. (iv)

(ख) 1. ऊपर 2. साथ 3. पास 4. अभाव में

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. धीरे-धीरे 2. कम 3. उधर, उतना 4. जितनी 5. क्यों, कुछ

(ङ) स्वयं कीजिए।

(च) 1. जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, उन्हें 'अव्यय' 'अ. व्यय' या 'अविकारी' 'अ विकारी' शब्द कहते है; जैसे- शीघ्र, तेज, बहुत, पास, तक, तथा, अथवा, परन्तु, वाह! उफ! आदि। 2. क्रिया विशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं। 3. संबंधबोधक अव्यय संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों का संबंध अन्य शब्दों से जोड़ता है। 4. मन के भावों को प्रकट करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं।

13. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. (ii) 2. (i) 3. (ii) 4. (iv)

(ख) गज-हाथी, बादल-घन, सर्प-साँप, चंद्र-चाँद, वृक्ष-पेड़, आम-रसाल

(ग) 1. पोखर, तड़ाग, सरोवर 2. माँ, अंबा, जननी 3. गिरि, शैल, पर्वत 4. धरती, जमीन, वसुधा

(घ) 1. शरीर 2. सूर्य 3. मेघ 4. दोस्ती 5. फूल 6. किताब

(ङ) पृथ्वी, आसमान, पानी, लड़का, आदमी, धरती

(च) 1. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। 2. समानार्थी शब्द

14. विलोम शब्द

(क) 1. (iii) 2. (i) 3. (iv) 4. (ii)

(ख) खुशबू, खट्टा, दोस्त, पश्चिम, नए, कम

(ग) 1. ठंडा 2. कड़वी 3. बदबू 4. खरीदने 5. तेज 6. साफ 7. अंधेरा 8. निडर

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 2. ताजा-बासी 3. लाभ-हानि 4. काला-सफेद 5. आसमान-धरती 6. चढ़ना-उतरना 7. मालिक-नौकर

(च) बुरा, दुश्मन, हार, नया, गरीब, निडर, ज्यादा, अनुचित, खरीदना, धरती

(छ) किसी शब्द का उल्टा अर्थ बताने वाले शब्द के 'विलोम शब्द' कहते है।

15. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) 1. (iii) 2. (ii) 3. (iv) 4. (ii)

(ख) 1. दीदी 2. चिड़ियाघर 3. भारतीय 4. डॉक्टर 5. शाकाहारी

(ग) बीमार, आस्तिक, गड़ेरिया

(घ) 1. जलचर 2. थलचर 3. ग्रामीण 4. कृतघ्न 5. निर्दय

(ङ) अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला एक शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहलाता है।

16. विराम चिह्न

(क) 1. (ii) 2. (iii) 3. (ii) 4. (ii)

(ख) 1. प्रश्नवाचक चिह्न (?), अल्प विराम चिह्न (,), अवतरण चिह्न (" "), पूर्ण विराम चिह्न (।), विस्मयसूचक चिह्न (!), योजक चिह्न (-), अर्द्धविराम चिह्न (;)

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. पूर्णविराम 2. अल्पविराम 3. प्रश्नवाचक 4. योजक चिह्न 5. अवतरण चिह्न

(ङ) 1. भाषा लेखन के समय प्रयुक्त संकेत चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं। 2. विराम का अर्थ है- रुकना या ठहरना। बोलते समय अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए या किसी बात पर बल देने . ... उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

17. मुहावरे

(क) 1. (iii) 2. (ii) 3. (i) 4. (ii)

(ख) 1. कठिन परिश्रम करना 2. आश्चर्यचकित होना 3. प्रसन्न होना 4. धोखा देना

(ग) 1. सो जाना 2. सफल न होना 3. क्रोधित करना 4. बेइज्जती करना 5. धोखा खाना

(घ) ऐसा वाक्यांश जो अपने शाब्दिक अर्थ के लिए नहीं बल्कि विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त किया जाता है, मुहावरा कहलाता है।

18. पत्र-लेखन

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. बुखार होने के कारण 2. टैगोर मॉडल

स्कूल 3. 500 रूपये

अनाया व्याकरण-4

1. भाषा एवं व्याकरण

(क) 1. मौखिक 2. लिखित 3. बोली 4. फारसी 5. व्याकरण

(ख) देवनागरी, देवनागरी, फारसी, गुरूमुखी

(ग) 1. भाषा हमारे भावों व विचारों को लिखकर व बोलकर प्रकट करने का एक माध्यम है। 2. भाषा निरन्तर बदलने वाली व्यावस्था है। आज हम .... भाषा हमारी भाषा से अलग एवं बदली हुई होगी। 3. भाषा के मुख्य रूप से दो प्रकार है। मौखिक भाषा, लिखित भाषा। 4. मौखिक 5. किसी भी भाषा को शुद्ध और अनुशासित करने का काम व्याकरण करता है। 6. किसी भी भाषा को शुद्ध और अनुशासित करने का काम व्याकरण करता है। व्याकरण यदि नहीं होगा तो भाषा का कोई शुद्ध और सही रूप प्रचलन में नहीं आ सकता है।

2. वर्ण विचार

(क) स्वर: उ, आ, ए, ऐ **व्यंजन:** त, च, क, र, म

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) इ-(ि), ई-(ी), ए (े), उ (ु), ऊ (ू), ऐ (ै)

(घ) आम, नाम; कुल, बुलबुल; हिसाब, मिलान

(ङ) कम, अधिक, कम, अधिक, कम, अधिक

(च) इनके उच्चारण में नाम और कंठ का अधिक प्रयोग किया गया है।

(छ) 1. वर्ण के दो भेद हैं- स्वर और व्यंजन। 2. भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसके खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है। 3. जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र स्वरों की सहायता से होता है, वे सभी व्यंजन कहलाते हैं। 4. क्ष, त्र, ज्ञ और श्र 5. श, ष, स, ह

3. शब्द-विचार

(क) सूर्य, दिवाकर, रवि; शशि, मयंक, राकेश; पृथ्वी, भू, धरा; नम, अंबर, गगन; जलद, घन, पयोधर

(ख) हाथ, टैक्स; गोद, संख्या

(ग) दु:ख, खट्टा, मृत्यु, कठोर

(घ) 1. दो या दो से अधिक वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है। 2. शब्दों का उच्चारण 3. कभी-कभी शब्दों की मात्राएँ अथवा वर्तनी गलत हो जाती है, तब भी वह सार्थक शब्द रहता है लेकिन उसे अशुद्ध शब्द कहते है। 4. अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं- सार्थक और निरर्थक। 5. वे शब्द जिनका उच्चारण लगभग एक समान लगे लेकिन उनके अर्थ अलग-अलग हों, तो ऐसे शब्दों को समश्रुत भिन्नार्थक शब्द कहा जाता है। 6. वे शब्द जिनके उल्टे अथवा विपरीत अर्थ लगाए जाएँ उन्हें विलोमार्थी शब्द कहते हैं। 7. उत्पत्ति के आधार पर, रचना के आधार पर, प्रयोग के आधार पर, अर्थ के आधार पर।

4. संज्ञा

(क) भाववाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक, जातिवाचक, जातिवाचक

(ख) 1. आगरा, गीता, मोहन, रामायण, हिमालय 2. जानवर, पशु, शहर, नदी 3. सुन्दरता, सुख, हार, बचपन

(ग) 1. मोहन, स्कूल 2. फूल 3. ताजमहल, आगरा 4. विद्यार्थी, मित्रता 5. पेड़, फल

(घ) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. संज्ञा के पाँच भेद हैं- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक और द्रव्यवाचक 3. जिन शब्दों से किसी विशेष वस्तु, व्यक्ति और स्थान के नाम का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है। 4. जिन शब्दों से किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी आदि गुण दशा, भाव एवं अवस्था का बोध होता है, उन शब्दों का भाववाचक संज्ञा कहते है। 5. जिन शब्दों से किसी धातु अथवा द्रव्य का बोध होता है, उसे धातुवाचक या द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है।

5. लिंग

(क) 1. रेल 2. भीड़ 3. झंडी 4. सामान 5. प्रसारित

(ख) पुल्लिंग शब्द: मोर, राजकुमार, कवि, छात्र, लेखक **स्त्रीलिंग शब्द:** कोयल, हथिनी, शेरनी, रानी, कवयित्री, छात्रा, राजकुमारी

(ग) 1. खरगोश तेज दौड़ता है। 2. मोर नाच रहा है। 3. किताब मेज पर रखी है। 4. शेर दहाड़ रहा है। 5. रेलगाड़ी, तेज दौड़ रही है।

(घ) 1. जिन शब्दों के द्वारा पुरुष या स्त्री का बोध होता है, उसे लिंग कहा जाता है। 2. दो 3. इसके सही ज्ञान से ही हम सही वाक्य बोल सकते है, ... ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है। 4. हिन्दी में लिंग का निर्धारण बड़ा ही कठिन है। संस्कृत का नपुंसक लिंग हिन्दी में कहीं स्त्रीलिंग तो कही पुल्लिंग के रूप में प्रयोग किया जाता है। 5. जिन शब्दों के द्वारा पुरुष जाति का बोध होता हैं, वे शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं; जैसे- लड़का, आदमी, पुरूष, हाथी, बैल, मोर, घोडा आदि।

6. वचन

(क) मछलियाँ, तितलियाँ, लड़कियाँ, घोड़े, पशुओं, जानवरों, लड़के, छात्राएँ, कुत्ते, पतंग

(ख) 1. एकवचन 2. बहुवचन 3. बहुवचन 4. एकवचन 5. बहुवचन

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. एक या अनेक होने का पता देने वाले शब्द को वचन कहते हैं। 2. हिंदी में दो वचन होते हैं- एकवचन और बहुवचन। 3. जिन शब्दों के द्वारा कई वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा प्राणियों का बोध होता है, वे शब्द बहुवचन कहलाते है; जैसे- केले, किताबें, गेदें, दोस्तों, गाड़ियों, पशुओं आदि।

7. सर्वनाम

(क) 1. आप 2. क्या 3. मैं 4. यह 5. मेरा

(ख) अनिश्चयवाचक, पुरूषवाचक, निजवाचक, प्रश्नवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, पुरूषवाचक, प्रश्नवाचक

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. मैं 2. तुम 3. हमें 4. वह 5. तुम

(ङ) जिन सर्वनाम शब्दों से किसी व्यक्ति का बोध होता है, उसे पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जिससे किसी खास व्यक्ति, स्थान आदि का बोध हो व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(च) 1. संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। 2. संज्ञा शब्दों के बार-बार प्रयोग करने से कथन या वाक्य उचित नहीं लगता है। इसी कारण संज्ञा के बदले सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हैं। 3. सर्वनाम के छह भेद हैं- पुरूषवाचक, प्रश्नवाचक, निश्चय -वाचक, अनिश्चयवाचक, निजवाचक, संबंध- वाचक 4. जिन सर्वनाम शब्दों से किसी व्यक्ति का बोध होता है, उसे पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं। 5. पुरूषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते है- प्रथम पुरूष, मध्यम पुरूष, अन्य पुरूष

8. विशेषण

(क) विशेषण: अच्छी, अच्छे, अच्छे, बड़ा, लाल

(ख) स्वयं कीजिए। **(ग)** स्वयं कीजिए।

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते है। 2. विशेषण चार प्रकार के होते हैं-गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक तथा सार्वनामिक। 3. जिन शब्दों की (संज्ञा एवं सर्वनाम) विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते है। 4. संज्ञा या सर्वनाम के किसी गुण, आकार, रूप, स्वाद रंग, दशा आदि का ज्ञान कराने वाले शब्द गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे- गोरा, काला, मोटा, पतला, बड़ा आदि। 5. संज्ञा या सर्वनाम की नाप-तौल संबंधी विशेषता बताने वाले शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे- कम, ज्यादा, अधिक, थोड़ा, अल्प आदि।

9. क्रिया

(क) 1. जागती 2. खेलता 3. पढ़ना 4. घूमना 5. बोलना

(ख) 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. सकर्मक 4. सकर्मक 5. अकर्मक

(ग) 1. दौड़ रहा है। 2. खरीद रहा है। 3. हँस रहे हैं। 4. पढ़ा रही है। 5. उड़ रहे हैं।

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) किसी काम के होने अथवा करने की सूचना देने वाले पदों को क्रिया कहते हैं। 2. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं- अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया 3. जिन वाक्य की क्रिया में कोई कर्म न हो, उस वाक्य की क्रिया अकर्मक क्रिया होती है। कर्त्ता के द्वारा क्रिया होती है लेकिन क्रिया के साथ उसका कर्म नहीं होता। 4. जिस से किसी कार्य करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया तथा जिस पर क्रिया का फल पड़े उसे कर्म कहते हैं। 5. जिन वाक्य में क्रिया के साथ उसका कर्म भी मौजूद हो, उसे वाक्य की क्रिया सकर्मक क्रिया होती है।

10. काल

(क) 1. वर्तमान काल 2. भूत काल 3. भविष्यत् काल 4. भूत काल 5. भविष्यत् काल

(ख) 1. नील गायों पूरी फसल बर्बाद कर रही है। 2. मैं खरगोश पालता था। 3. कल में मछली पकड़ूँगा। 4. वह घर गया। 5. मैं प्रतिदिन सुबह जाग जाता था।

(ग) 1. काल का शाब्दिक अर्थ है- समय। कहीं-कहीं काल का अर्थ मृत्यु से भी लिया जाता है। लेकिन व्याकरण के अन्तर्गत काल का अर्थ समय ही होता हैं। 2. काल के तीन भेद होते हैं- भूत, वर्तमान और भविष्यत्। 3. जो कार्य आने वाले समय में होने वाला हो उस वाक्य की क्रिया भविष्यत् काल की होगी। ऐसे वाक्यों में क्रिया के अन्त में गा, गी एवं गे लगा रहता है। 4. जो कार्य हो रहा है अर्थात् वर्तमान समय में जो कार्य जारी है उस वाक्य की क्रिया वर्तमान काल में लिखी जाएगी। इस क्रिया के अन्त में प्राय: हैं, हो, एवं हूँ लगा रहता है। 5. भूत काल में।

11. अव्यय शब्द

(क) 1. तेज 2. के बिना 3. के पीछे 4. तो 5. वाह!

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) **विकारी शब्द:** अच्छा, काला, जानवर, फूल, गाय, पक्षी **अविकारी शब्द:** वाह, परन्तु, अथवा, आजकल, सामने, और

(घ) 1. वे शब्द जिनका कहीं भी प्रयोग करते समय उनके रूप में कोई परिवर्तन न हो, ऐसे शब्दों को अव्यय शब्द कहा जाता है। 2. अव्यय शब्दों को अविकारी शब्द भी कहा जाता है। 3. अव्यय मुख्यत: निम्नलिखित प्रकार के होते हैं लेकिन अब निपातों को भी इनमें जोड़ देने से इनकी संख्या पाँच हो गयी हैं- क्रिया विशेषण, समुच्चयबोधक, सम्बन्धबोधक, विस्मयबोधक, निपात 4. तथा, किन्तु, परन्तु, लेकिन 5. ही, तो

12. विलोम शब्द

(क) गर्म, मँहगा, गुलाम, कठोर, निराशा, कमजोर

(ख) 1. सफलता 2. बुद्धिमान 3. मीठा 4. विजय

(ग) 1. किसी शब्द के विपरीत अथवा उल्टे रखने वाले शब्द को विलोम शब्द कहा जाता है। 2. भाषा में स्पष्टता आती है तथा शब्द भंडार में वृद्धि होती है।

13. पर्यायवाची शब्द

(क) गज, मतंग, हस्ती; अश्व, तुरंग, घोटक; पक्षी, खग, पखेरू; पवन, वायु, समीर; अग्नि, पावक, अनल

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. किसी एक शब्द के समान अर्थ रखने वाले कई शब्दों को समानार्थी अथवा पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. शब्दों में एक रूपता नहीं रहती। 3. पृथ्वी, भू, धरा; नभ, अम्बर, गगन; रवि, दिनकर, आस्कर; शशि, मयंक, राकेश; नीर, पानी, अम्बु

14. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) 1. निरपराधी 2. अनुशासित 3. अतिथि 4. अजातशत्रु 5. खनिज 6. भविष्य 7. अपराह्न 8. प्रसन्नता 9. नीतिज्ञ 10. सत्यवादी

(ख) परोपकार करने वाला। मार्ग में खर्च होने वाला। ईश्वर में विश्वास न रखने वाला। जिस पाना कठिन हो।; जहाँ जाना कठिन हो।

(ग) 1. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग हम प्राय: अधिक शब्दों के बोलने तथा लिखने से बचने के लिए करते है। 2. मनुष्य कम परिश्रम करके अपना काम चलाना चाहता है। यह उसका स्वभाव है। 3. अनेक शब्दों अथा वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग इस दृष्टि से बड़ा ही उपयोगी है। कम शब्दों में बात को प्रभावशाली ढंग से कहा जा सकता है।

15. वाक्य-विचार

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. शब्दों का सार्थक समूह वाक्य कहलाता है। 2. वाक्य के दो अंग होते है- उद्देश्य तथा विधेय। 3. अनेक वाक्यों से मिलकर भाषा का निर्माण होता है। 4. भाषा के द्वारा हम अपने भावों और विचारों का आदान-प्रदान करते है। 5. वर्ण एवं शब्द के बाद भाषा का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग वाक्य होता है। 6. नहीं

16. मुहावरे

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) मुहावरे वाक्य या वाक्यांश का साधारण अर्थ के स्थान पर विशेष अर्थ बतलाते हैं।

17. विराम-चिह्न

(क) 1. रूकना 2. स्पष्ट

(ख) प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, कोष्ठक, योजक, पूर्ण विराम, उद्धरण चिह्न, अल्प विराम

वाक्यों में प्रयोग: स्वयं कीजिए।

(ग) 1. सुख-दुख, हानि-लाभ सब कुछ ईश्वर के हाथ है। 2. नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कहा था- ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।'' 3. 'रामचरितामानस' तुलसीदास का अमर काव्य है। 4. क्या आप कल ही चले जाएँगे?

(घ) 1. लिखते समय अपनी बात को सही-सही समझने के लिए हम जिन चिह्नों का विराम के रूप में प्रयोग करते है, उन्हें विराम -चिह्न कहते है। 2. **अल्प-विराम:** पढ़ते समय या बोलते समय जब हम बहुत थोड़ा रुकते हैं तब 'अल्प-विराम चिह्न' का प्रयोग किया जाता है। **अर्द्ध-विराम:** जहाँ अल्प-विराम की अपेक्षा कुछ अधिक देर तक ठहरना हो, वहाँ 'अर्द्ध-विराम' का प्रयोग किया जाता है। 3. **पूर्ण-विराम:** जहाँ वाक्य पूर्ण होता है, वहाँ 'पूर्ण-विराम' का प्रयोग किया जाता है। **प्रश्नवाचक चिह्न:** इस चिह्न का प्रयोग प्रश्न पूछने वाले वाक्यों के अंत में होता है। 4. **उद्धरण चिह्न:** साधारण: किसी के कथन, वाक्यांश आदि को उद्धृत करने के लिए उद्धरण-चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

18. पत्र-लेखन

(क) 1. दो 2. पत्र-लेखन के द्वारा हम अपने मन की बात को निश्चित रूप में लिखकर अपने सम्बन्धी के पास भेज सकते हैं। टेलीफोन, एम.एम. एस. में बात करने की एवं संदेश भेजने की एक निश्चित सीमा है। लेकिन पत्र-लेखन में कोई सीमा नहीं है न तो समय एवं न ही स्थान की। 3. आजकल दूरभाष ई-मेल, लघु संदेश सेवा के द्वारा सूचनाएँ समाचार तथा बातचीत सम्पन्न होती है। 4. अनौपचारिक पत्रों के प्रकार तो अनेक हैं। अध्ययन की सुगमता के लिए कुछ के नाम अधोलिखित है- निमन्त्रण पत्र, बधाई पत्र, शुभकामना पत्र, धन्यवाद पत्र, सांत्वना पत्र। 5. ऐसे पत्र जो उन अधिकारियों अथवा व्यक्तियों को लिखे जाते है जिनसे लिखने वाले का कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं होता, उन्हें औपचारिक पत्र कहाज जाता है; जैसे- किसी अधिकारी अथवा संस्था प्रमुख को पत्र, विद्यालय के प्राचार्य को पत्र आदि। ऐसे पत्र जो अपने परिवाजनों, सगे-सम्बन्धियों अथवा परिचितों को लिखे जाते है, उन्हें अनौपचारिक पत्र कहते है; जेसे माता-पिता, भाई-बहन, अथवा मित्र को पत्र।

अनाया व्याकरण-5

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. बोलकर, लिखकर 2. सुनकर, पढ़कर 3. लिखित, मौखिक 4. फारसी, रोमन 5. मौखिक भाषा

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓

(ग) 1. भाषा का वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, लिखकर, व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करना है। 2. भाषा के तीन रूप हैं- मौखिक, लिखित तथा सांकेतिक 3. व्याकरण के द्वारा हम भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान सीखते हैं।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. शब्द 2. वर्णमाला 3. ह्रस्व 4. ह्

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसके और खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है। 2. जिन वर्णों का उच्चारण किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना किया जाता है, वे स्वर कहलाते है। हिंदी भाषा में इनकी संख्या ग्यारह है। ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं हो सकता, व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला में कुल 35 व्यंजन हैं। 3. **ह्रस्व स्वर**- जिन स्वरों के उच्चरण में सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये चार होते हैं- अ, इ, उ तथा ऋ। **दीर्घ स्वर**- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दो गुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये सात होते हैं- आ, ई, ऊ, ऐ, ओ तथा औ। **प्लुत स्वर**- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व-स्वर से तीन गुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इसका चिह्न ३ है; जैसे- रा३म, जा३ओ, ओ३म आदि। 4. जिन व्यंजनों का उच्चारण कंठ, होंठ, जिह्वा आदि के स्पर्श द्वारा होता है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला में 'क' वर्ग से 'प' वर्ग तक सभी 'स्पर्श' व्यंजन हैं। 5. स्वयं कीजिए।

3. शब्द-विचार

(क) विदेशज, विदेशज, विदेशज, विदेशज, विदेशज, विदेशज, तद्भव, तदभव

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) सोना, कान, चिट्ठी, दूध, आग, घी, दाँत, सच, सात, मुँह

(घ) सर्प, आम्र, कोकिल, ग्राम, सखा, अंध, कर्म, व्याघ्र, नेत्र, गज

(ङ) 1. दो या दो से अधिक वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है। 2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं– तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज। 3. **सार्थक शब्द**– जिन शब्दों का कोई न कोई अर्थ होता है, वे सार्थक शब्द कहलाते हैं। **निरर्थक शब्द**– जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता, वे निरर्थक शब्द कहलाते हैं। 4. **यौगिक शब्द**– जो दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं। **योगरूढ़ शब्द**– जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं और किसी विशेष अर्थ में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

4. पर्यायवाची शब्द

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. प्रभु 2. आकाश 3. प्रातः 4. दंगे 5. शरीर 6. वृक्ष 7. पुत्र 8. अध्यापक **(ग)** समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

5. विलोम शब्द

(क) 1. प्रकाश 2. उत्तर 3. घृणा 4. अहित

(ख) निर्धन, लिखित, मंद, पक्ष, कठिन, पक्ष, कठिन, स्वस्थ, हल्का, आकाश, निर्जीव, मुलायम, पराजय, अंत, नियति, प्रकाश, रात, पुरातन

(ग) 1. कठिन 2. साहसी 3. सस्ती 4. चढ़ाव 5. अनुपयोगी 6. अप्रसन्न **(घ)** स्वयं कीजिए।

6. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) 1. मुझसे बूढ़े आदमी का कंपकपाना देखा नहीं गया। 2. रबड़ उपयोगी पदार्थ है। 3. वर्षा के बाद इंद्रधनुष दिखाई दी। 4. यह कार्यक्रम साप्ताहिक है। 5. गांधीजी केवल स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करते थे। **(ख)** 1. खोजी 2. इन्द्रधनुष 3. चोर 4. नालायक 5. भिखारी 6. शिक्षक **(ग)** अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला एक शब्द अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहलाता है।

7. संज्ञा

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. घर, मंदिर 2. बाग, मोर 3. शहर, किला 4. कुत्ता, जानवर

(ग) 1. दिल्ली 2. हिंदी 3. हिमालय, गंगा, यमुना 4. गाय, वन

(घ) 1. हर्ष 2. शोक 3. भय 4. हर्ष

(ङ) **मोहन** एक **अच्छा** लड़का है। एक **दिन** वह एक **पहाड़** पर गया। उस **पहाड़** को **हिमालय** कहा जाता है। **गंगा** नहीं **हिमालय** से ही निकलती है। **मोहन** की **बचपन** से ही यह इच्छा थी कि **पहाड़ों** की **ऊँचाई** और **सुंदरता** को निकट से देखे। उसने **बर्फ** से ढके **पहाड़ ऋषिकेश** में भी देखे। इन्हें देखकर वह **प्रसन्न** हो गया।

(च) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. संज्ञा के पाँच भेद है– व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक और द्रव्यवाचक। 3. किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान आदि के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। 4. किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान आदि के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जिस संज्ञा शब्द से किसी प्राणी, वस्तु, स्थान आदि की पूरी जाति का बोध होता है, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते है।

8. लिंग

(क) हंसिनी, ठकुराइन, कवयित्री, नागिन, नारी, मोरनी, युवती, चुहिया

(ख) ऊँट, सेठ, धोबी, पंडित, धोबी, नौकर, ससुर, लेखक **(ग)** 1. चिड़िया दाना चुगती है। 2. बालक ने बूढ़े को सड़क पार करवाया। 3. छात्रा अध्यापक के पास गई।

(घ) 1. लिंग स्त्री जाति और पुरूष जाति का बोध कराता है। 2. लिंग के दो भेद हैं– पुल्लिंग, स्त्रीलिंग

9. वचन

(क) वस्तुएँ, सखियाँ, तितलियाँ, नदियाँ, गुब्बारे, राते, संतरे, पोशाकें, शीशे, चुहिये, बुढ़ियाँ, कन्याएँ

(ख) लड़की, मुर्गा, पुस्तक, भैंस, मछली, आँख, पोशाक, विधि **(ग)** 2. छुट्टियाँ खत्म हो गई। 3. मेरे पास खिलौने हैं। 4. मेरी अनेक बहिनें हैं। 5. लड़के बगीचे में खेल रहे थें।

(घ) 1. एक या अनेक संख्या का बोध कराने वाले

शब्द वचन कहलाते हैं। 2. **एकवचनः** शब्द के जिस रूप से एक वस्तु या एक प्राणी का बोध होता है, उसे 'एकवचन' कहते है। **बहुवचनः** शब्द के जिस रूप से अनेक वस्तुओं या अनेक प्राणियों का बोध होता है, उसे 'बहुवचन' कहते है। 3. स्वयं कीजिए।

10. कारक

(क) ने; से; को; का, के, की; के लिए; में; को; अरे

(ख) 1. ग्राहक ने दुकानदार से दाम पूछा। 2. सुदामा ने कृष्ण से विदा ली। 3. भारी वस्तुएँ रेलगाड़ी द्वारा भेजी जाती हैं। 4. कारखाने के गंदे पानी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। 5. लोगों पर हमारी बातों का असर हुआ।

(ग) करण, कर्ता, करण, कर्म, संबंध, अधिकरण, अधिकरण, अपादान, करण, संबोधन

(घ) 1. कारक वाक्य के शब्दों में परस्पर संबंध बताने का कार्य करते हैं। 2. कारक के आठ भेद होते हैं- कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन।

11. सर्वनाम

(क) 1. **सर्वनाम**- जैसा, वैसा **भेद**- संबंधवाचक 2. **सर्वनाम**- कोई **भेद**- अनिश्चयवाचक 3. **सर्वनाम**- मैं **भेद**- पुरुषवाचक 4. **सर्वनाम**- वह **भेद**- पुरूषवाचक 5. **सर्वनाम**- कुछ **भेद**- अनिश्चयवाचक 6. **सर्वनाम**- क्या **भेद**- प्रश्नवाचक

(ख) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते है। 2. संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के नाम को कहते हैं। संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द सर्वनाम कहलाता है। 3. सर्वनाम के छः भेद होते हैं- पुरुषवाचक, निश्चय-वाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक। 4. **उत्तम पुरुषः** जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने या लिखने वाला अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुष कहते है। **मध्यम पुरुषः** बोलने या लिखने वाला जिसे संबोधन करके बोले या लिखे, उसके नाम के बदले प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम, मध्यम पुरुष कहलाते हैं। **अन्य पुरुषः** बात कहने वाला बात सुनने वाले से किसी अन्य व्यक्ति के बारे में बातचीत करते समय जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें अन्य पुरुष कहते हैं। 4. **निश्चयवाचक सर्वनाम**- जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित वस्तु का बोध कराते है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**- जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित वस्तु का बोध नहीं कराते हैं, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

12. विशेषण

(क) 1. अनेक 2. ऊँचा 3. प्रथम 4. कम 5. कँटीले 6. छोटी 7. सभी

(ख) 1. <u>दसवीं</u>, संख्यावाचक 2. <u>आयताकार</u>, गुणवाचक 3. <u>सारा</u>, परिणामवाचक 4. <u>यह</u>, संकेतवाचक 5. <u>इस</u>, संकेतवाचक 6. <u>पहले</u>, गुणवाचक

(ग) 1. संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते है। 2. विशेषण चार प्रकार के होते हैं- गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, संकेतवाचक। 3. विशेषण जिन संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते है, उन्हें विशेष्य कहते हैं। 4. **परिमाणवाचक विशेषण**- जिन विशेषणों से किसी वस्तु की मात्रा या नाम-तोल का बो बोध होता है, उन्हें 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं। **संख्यावाचक विशेषण**- जिन विशेषणों से संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उन्हें 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं। 5. तुलना की दृष्टि से विशेषण की अवस्थाओं के तीन भेद है- मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था।

13. क्रिया

(क) 1. जाता हूँ। 2. उड़ रहे हैं। 3. सुना रही है। 4. गाती है। 5. पका रही है।

(ख) 1. <u>चहचहा रहे हैं</u>। अकर्मक 2. <u>फूलदान रखा</u>। सकर्मक 3. <u>शरमा रही हैं</u>। अकर्मक 4. सकर्मक 5. अकर्मक

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. जिन शब्दों के द्वारा किसी कार्य का करना अथवा होना पाया जाता है। उन्हें 'क्रिया' कहते है। 2. क्रिया के दो भेद हैं: सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया 3. जिन क्रियाओं के साथ कर्म लगा हो और क्रिया का फल कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, उन्हें 'सकर्मक क्रिया' कहते है। जिन क्रियाओं के व्यापार (कार्य) और फल दोनों कर्त्ता में ही रहें, उन्हें

'अकर्मक क्रिया' कहते है। 4. हाथी गन्ना खा रहा है। मीरा पत्र लिख रही है। किसान हल चला रहा है।

14. काल

(क) 1. वर्तमान काल 2. भूत काल 3. वर्तमान काल 4. भविष्यत् काल 5. भूत काल 6. भूत काल 7. भविष्यत् काल 8. भविष्यत् काल

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। 2. काल के तीन भेद हैं- भूत, वर्तमान और भविष्यत्। 3. क्रिया के जिस रूप से भूत या अतीत में क्रिया पूर्ण होने का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। 4. वर्तमान काल- क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान काल में होना पाया जाए, उसे 'वर्तमान काल' कहते है। भविष्यत् काल- क्रिया के जिस रूप से भविष्य में कार्य होने का बोध होता है, उसे 'भविष्यत् काल' कहते है।

15. अव्यय

(क) 1. रोज 2. साफ-साफ 3. दिनभर 4. सुरीला 5. धीरे 6. जल्दी 7. अचानक

(ख) 1. तेज, क्रिया विशेषण 2. हाय! विस्मयदिबोधक 3. और, संबंधबोधक विशेषण 4. के पीछे, क्रिया विशेषण 5. लेकिन, समुच्चयबोधक 6. अरे! विस्मयादिबोधक

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी या अव्यय शब्द कहते है। 2. अव्यय के चार भेद है: क्रिया-विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चबोधक, विस्मयादिबोधक 3. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया-विशेषण शब्द कहते हैं। कालवाचक क्रिया-विशेषण, स्थानवाचक क्रिया-विशेषण, रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण 4. **संबंधबोधक:** वे शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम का सम्बन्ध वाकय के अन्य पक्षों से जोड़ते है, उन्हें संबन्ध बोधक अव्यय कहते है। **समुच्चयबोधक अव्यय या योजक:** जो अविकारी शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को आपस में मिलाते हैं, वे 'समुच्चयबोधक अव्यय' या 'योजक' कहते है। 5. जिन अव्यय शब्दों से हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय, ग्लानि आदि के भाव प्रकट होते है, वे 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहलाते है। 6. संज्ञा, सर्वनाम, विशेष्ज्ञण तथा क्रिया 'विकारी' शब्द है।

16. वाक्य-विचार

(क) 1. अध्यापक 2. गाड़ी में 3. रविवार को 4. राजा 5. पुलिस 6. पहला प्रश्न 7. दिल्ली 8. मम्मी ने 9. कमीज 10. कुली ने

(ख) 1. **उद्देश्य**- माँ जी **विधेय**- खीर बना रहीं है। 2. **उद्देश्य**- माली **विधेय**- ने फूलों की मालाएँ बनायी। 3. **उद्देश्य**- चित्रकार **विधेय**- चित्र बना रहा है। 4. **उद्देश्य**- रोहन और मोहित **विधेय**- आ गए हैं। 5. **उद्देश्य**- नानी **विधेय**- ने कहानी सुनाई। 6. **उद्देश्य**- क्रिकेट **विधेय**- एक मजेदार खेल है।

(ग) 1. मैंने 2. रमेश 3. राजा 4. माँ

(घ) 1. शब्दों का सार्थक समूह वाक्य कहलाता है। 2. वाक्य के दो अंग है- उद्देश्य तथा विधेय। 3. **उद्देश्य**- जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उस व्यक्ति या वस्तु को 'उद्देश्य' कहते हैं। **विधेय**- उद्देश्य के सम्बन्ध में जो कही जाए उसे 'विधेय' कहते है।

17. विराम चिह्न

(क) 1. सुख-दुःख, हानि-लाभ सब कुछ ईश्वर के हाथ हैं। 2. 'रामचरितमानस' तुलसीदास का अमर काव्य है। 3. नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कहा था- ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।'' 4. अरे बाप रे! मैं तो अब जरूर पकड़ा जाऊँगा। 5. नितिन, नैन्सी निशी और सोनिया चिड़ियाघर घूमने गए। 6. दोपहर का समय था, चारों ओर सन्नाटा था, ऐसे में मदद के लिए कौन आता।

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. भाषा-लेखन के समय प्रयुक्त संकेत चिह्नों को विराम-चिह्न कहते है। 2. **अल्प -विराम:** पढ़ते समय या बोलते समय जब हम बहुत थोड़ा रुकते हैं तब 'अल्प-विराम चिह्न' का प्रयोग होता है। **अर्द्ध-विराम:** जहाँ अल्प-विराम की अपेक्षा कुछ अधिक देर तक ठहरना हो, वहाँ 'अर्द्ध-विराम' का प्रयोग किया जाता है। 3. **पूर्ण-विराम:** जहाँ वाक्य पूर्ण होता है, वहाँ 'पूर्ण-विराम' का प्रयोग किया जाता है। **प्रश्नवाचक**

चिह्न- इस चिह्न का प्रयोग प्रश्न पूछने वाले वाक्यों के अंत में होता है। 4. **उद्धरण चिह्न**- साधारणत: किसी के कथन, वाक्यांश आदि को उद्धत करने के लिए उद्धरण-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। **योजक चिह्न:** इस चिह्न का प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने के लिए किया जाता है। इस चिह्न की लंबाई बहुत छोटी होती है। 5. किसी पद का अर्थ प्रकट करने के लिए अथवा किसी वाक्यांश का अर्थ दर्शाने के लिए या नाटक के कथन के पूर्व पात्र की चेष्टादि के चित्रांकन हेतु 'कोष्ठक' का प्रयोग किया जाता है।

18. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. बहुत गुस्सा होना 2. बहुत दु:खी करना। 3. घबरा जाना। 4. भाग खड़ा होना। 5. जीत जाना।

(ख) 1. दाँत खट्टे कर दिए। 2. मुँह में पानी भर आया। 3. आँख लग गई। 4. नौ दो ग्यारह हो गया। 5. नाक में दम कर दिया।

(ग) ऐसे वाक्य तथा वाक्यांश जो किसी साधारण अर्थ के स्थान पर विशेष अर्थ बतलाते है, मुहावरे कहलाते है। है।

(घ) मुहावरा- 1. मुहावरा प्राय: छोटे होते है। 2. मुहावरों का सीधा अथवा प्रत्यक्ष अर्थ नहीं लिया जाता यानी मुहावरों का सही अर्थ वाक्य में प्रयोग करने पर ही स्पष्ट होता है। 3. मुहावरों का प्रयोग प्राय: अपनी बात को सुन्दर व प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है। 4. वाक्य में प्रयोग करने पर मुहावरों के काल, लिंग और वचन में परिवर्तन भी हो जाता है।

लोकोक्ति- 1. मुहावरों की तुलना में लोकोक्तियाँ बड़ी होती हैं। 2. मुहावरों की अपेक्षा लोकोक्ति का अर्थ प्राय: स्पष्ट होता है। यानी लोकोक्तियाँ अपना स्पष्ट अर्थ रखती है। बिना वाक्य प्रयोग किए ही लोकोक्ति का अर्थ मालूम हो जाता है। 3. लोकोक्ति का प्रयोग किसी सत्य या वास्तविकता के समर्थन में किया जाता है। 4. जबकि वाक्य में परिवर्तन करने पर लोकोक्ति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है।

(ङ) 1. अधिक परिश्रम का थोड़ा फल 2. थोड़े गुण वाला प्रदर्शन अधिक करता है 3. मुसीबत में और मुसीबत आना 4. कार्य शुरू करते ही बाधा आना 5. ऊपर से सज्जन भीतर से कपटी

(च) 1. अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत। 2. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। 3. आँख का अंधा नाम नयनसुख 4. हाथ कंगन को आरसी क्या।

(छ) 1. लोकोक्ति शब्द लोक और उक्ति के योग से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है- लोक में प्रचलित कथन। यानी ऐसा कथन जो लोक अनुभवों पर आधारित हो और लोगों के बीच प्रचलित हो उसे 'लोकोक्ति' कहते है। 2. ऐसा कथन जो लोक अनुभवों पर आधारित हो और लोगों के बीच प्रचलित हो उसे 'लोकोक्ति' कहते है। 3. स्वयं कीजिए। 4. नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

19. पत्र-लेखन

1. पत्र-लेखन एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा हम अपने मित्रों, सम्बन्धियों तथा अधिकारियों से घर बैठे संपर्क कर सकते हैं। अपने विचारों को दूसरों को दूसरों तक पहुँचाने का सबसे सरल साधन 'पत्र'। **2.** आजकल आधुनिक तकनीकी युक्त तीव्र साधनों की उपलब्धि के कारण। **3.** प्रार्थना पत्र (अधिकारी वर्ग को पत्र) निजी पत्र (व्यक्तिगत पत्र) व्यावसायिक पत्र (कामकाजी पत्र) व्यावाहारिक पत्र (निमंत्रण पत्र) **4.** स्वयं कीजिए।

20. संवाद-लेखन

1. दो लोगों के बीच परस्पर बातचीत करना। **2.** संवाद-लेखन वास्तव में एक कला है। दो परस्पर लोगों के बीच बातचीत अथवा दो से अधिक लोगों के बीच होने वाली बातचीत को तारतम्य से लिखना संवाद-लेखन है। **3.** संवाद छोटे-छोटे एवं भावानुरूप होने चाहिए। संवादों की भाषा सरल और स्वाभाविक हो। संवाद पात्रों अथवा व्यक्तियों के अनुरूप हो। संवाद परिस्थितियों के अनुरूप हो।, यथाप्रसंग संवादों में हास्य एवं व्यंग्य का समावेश भी हो। **4.** नाटक में **5.** स्वयं कीजिए। **6.** स्वयं कीजिए।

21. अपठित गद्यांश/पद्यांश

1. तपती किरण 2. तपती किरणों का 3. हैरान-परेशान 4. पृथ्वी के सभी जल स्रोत सूखने लगते हैं, जंतुओं में बेचैनी हो जाती है। 5. गर्मी के कारण सूखकर गिरी पत्तियों के जमा होने से।